JULY 2020 VOL. 01

CHIRPS

The latest news and updates from Indian Railways Personnel Service

IN THIS ISSUE

Hors d' oeuvre : Musings

RAILWAYS AND THE INDIAN IMAGINATION BY ANAND MADHUKAR

Entrée : Spotlight

"लॉक डाउन "- शिक्षा के लिए एक सुनहरा अवसर
BY ANURAG TRIPATHI

IN-FOCUS: JACINDA ARDERN
BY DR PRAVEEN KUMARI

Buffet Froid : We Shall Overcome

कोविद-19 काल के कुछ मानवीय पहलू
BY AWADESH KUMAR

COVID-19 AND OGS
BY ABHISHEK KESARWANI

Sorbet : Storyboard

रिहा
BY RAHUL SHRIVASTAVA

Entremets : Rhyme and Reason

ON THE GHATS OF BANARAS
BY LILY PANDEYA

चल पड़ेगी रेल ये मेरी, फिर से दौड़ेगा ये देश
BY SWATI AGARWAL

संवाद : समय और युवा
BY VIJAY KUMAR

Savoureux : Snapshots

BY SAGARIKA PATNAIK

La Carte : Beginnings...

A message from the editorial team

Begin with a dream. Add generous dollops of dedication, some spoonfuls of technology, mix news and views to taste, garnish with a generous pinch of creativity. Stir well, and let it simmer over the slow fire of consultation and reflection. Finally, take it out of the cooking pot and lay the lavish spread on the screen. The IRPS website is now ready for the world to savor.

And then, at the end of a multi-course experience, there is 'Chirps' as the dessert. In keeping with the lavish theme, this dessert itself is spread over many courses. To whet your appetite, as the Hors d' oeuvre, we have musings on the role of Railways in shaping national imagination and its significance in popular culture; and a spicy and tangy satire on bosses. Moving to the main dishes, under Entrée we turn the spotlight on how the Covid induced lockdown is a golden opportunity for education, and how the feisty PM of New Zealand carries the torch not just for women empowerment, but also for a new world order based on kindness and empathy. As the Buffet Froid, we present before you a glimpse of the efforts of the IRPS community in combating the pandemic, underlined by the conviction that we shall overcome. Then, for Sorbet as relief between meals, we have a lovely little story on our storyboard; and finally, in Entremets, we have poetry as the food for our souls in our Rhyme and Reason section. But wait, we won't let you go without some delicious, lip smacking Savoureux dressed as snapshots. Carry the memories of a spring in bloom when you leave, and come back again and again, not just to partake of the delicacies, but also to whip up dishes for all of us to savor.

You will find here a repast that showcases your individual and collective efforts, presents news morsels from your workplace, and creates a cuisine designed to stimulate your creative taste buds.

Bon appetit

From all of us in the community kitchen. Au Revoir.

RAILWAYS AND THE INDIAN IMAGINATION

By ANAND MADHUKAR

Aradhana (1969), Dil Se (1998), Dilwale Dulhania Le Jayenge (1995), Jab We Met (2007), Naayak (1966), Parineeta (2005), Pathar Panchali (1955), Sadma (1983), Swades (2004) and Darjeeling Ltd (2007)were the ten Bollywood films starring trains shortlisted by National Geographic in a 2016 article

Railways in India have played a crucial role in the nationalist project and the concept of India as a nation.

Geographically, by unifying the length and breadth of the country, economically by connecting the hinterland to distant markets and by making possible the movement of labour and resources, politically by making communication faster and by making possible the connect of Mahatma Gandhi with the masses, socially by striking a blow against caste barriers because the necessity of travelling together made away with caste segregation, and culturally by enabling sharing of cultural mores and also by emerging as a cultural symbol for the nation itself.

One of the most potent representations of the unifying project of Railways and its identification with a nascent nation can be seen in the 1954 film Jagriti, where Abhi Bhattacharjee as a teacher taking his students on a train trip, sings Kavi Pradeep's "Aao bachhon tumhe dikhayein jhanki hindustan ki" to familiarise his students with the diversity and heritage of India, and in the process squarely locates the cultural heritage of India, in the sacrifices made by the rulers of the past and the freedom fighters of the present (Jalianwala Bagh martyrs). Using Railways and a train journey as tropes, the song thus places the nation in a unified istorical, cultural and political context.

Even the humble train whistle has had several cameos in lyrical musings across the years. I can think of at least three interesting ways in which the train whistle has been represented in Hindi songs. Kishor's Gaadi bula rahi hai/ Seeti baja rahi hai from the 1974 film Dost, strikes a note using in its opening credits the toy train chugging up to Shimla, to make the identification of the train journey with the journey of life itsel. Long shots of the train journey and the train itself, interspersedwith close-ups of Dharmendra sitting by the window, combine to make the representation complete.

The Rajasthani folk song Challa challa re driver gadi haule haule/ Engine ki seeti se mharo manreprised in the 2014 film Khoobsoorat uses the train whistle to evoke a sense of thrill in anticipation of meeting the beloved, by identifying the vibration of the whistle with that of a vibrating heart.

And finally, there is that wistful number from the 1972 film Pakeezah, sung by Lata and picturised on Meena Kumari, Chalte chalte yun hi koi mil gaya tha which ends with thepiercing sound of a train whistle that replaces the customary applause at the end of a courtesan's performance. The whistle here symbolises an ending, as in a train reaching a station, and the absence of applause a journey to be undertaken alone

"लॉक डाउन ": शिक्षा के लिए एक सुनहरा अवसर

BY ANURAG TRIPATHI

विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करे। जिसके द्वारा हम रोग, शोक, द्वेष, पाप, दीनता, दासता, गरीबी, बेकारी, अभाव, अज्ञान, दुर्गुण, कुसंस्कार, आदि की दासता से मुक्ति पा सकें । विद्या वह है जो ज्ञान, मूल्य एवं कौशल का रसपान करा सके। जो शील, स्वास्थ्य, संयम, विवेक, विनय, श्रद्धा, उत्साह, वीरत्व, सेवा, सहयोग एवं प्रेम का भाव जगा सके ।

प्राचीन काल में यही शिक्षा तोता-रटंत की अपेक्षा प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुभव, क्रिया एवं सीख के माध्यम से होती थी। जीवन जीने के लिए हर बच्चे को आवश्यक, उपयोगी एवं कौशलपूर्ण शिक्षा दी जाती थी । दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोल, भूगर्भ, प्राणिशास्त्र, रसायन, शिल्प, वास्तु, अर्थ, नीति, धर्म आदि के विद्वान घर-घर होते थे और इन विषयों का वे क्रियात्मक तरीके से अनुभवपूर्ण शिक्षा प्राप्त करते थे। उस समय तो भारत सोने की चिड़िया हुआ करता था । वह व्यापार एवं अध्ययन का सिरमौर होता था।

आज की स्कूली शिक्षा ज्ञान तो दे रही है लेकिन कौशल विकास नही कर पा रही है । चरित्र निर्माण का प्रयास तो कर रही है लेकिन मूल्यों का बीजारोपण नहीं कर पा रही है। शत-प्रतिशत अंक तो दे रही है लेकिन रचनात्मकता का विकास नहीं कर पा रही है । स्कूली शिक्षा एवं व्यावहारिक जीवन के बीच की खाईं लगातार बढ़ती जा रही है । ज़्यादातर बच्चे उन रोजगारों में भाग्य आज़मा रहे हैं जिनमें उनका इनट्रेस्ट कभी था ही नहीं । यह स्थिति समाज एवं राष्ट्र दोनों के विकास में बाधक है । आख़िर यह स्थिति क्यों है ? जब हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नेशनल करीकुलम फ़्रेमवर्क, एन.सी.ई.आर.टी. सी.बी.एस.ई एवं एकेडमिक बाडीज़ के सारे पॉलिसी डाक्यूमेंट्स इस बात पर ज़ोर देते हैं कि शिक्षा अनुभव परक, व्यावहारिक, नैतिक, प्रयोगात्मक, कौशलपूर्ण, आनंददायक एवं रोज़गारोन्मुखी होनी चाहिए तो बातें ज़मीन पर क्यों नहीं उतर रहीं हैं ?यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि शिक्षा के उच्च पायदान पर बैठे विश्व के ज़्यादातर देशों में वही मूल विषय पढ़ाए जाते हैं जो भारत में पढ़ाए जाते हैं।

तो कमी कहाँ है ? ग़ैप कहाँ है ? समस्या कहाँ है ? वस्तुत: यहाँ असली खेल पढ़ाने एवं सिखाने के तरीक़ों को लेकर है । टीचिंग लरनिंग प्रोसेस को लेकर है । करीकुलम को लेकर है । पेडागॉजी को लेकर है । हम पढ़ाने पर ज़ोर देते हैं, वे सिखाने पर ज़ोर देते हैं । हम कंटेंट पर ज़ोर देते हैं, वे लरनिंग आउटकम पर ज़ोर देते हैं ।हम ज्ञान पर ज़ोर देते हैं , वे ज्ञान के प्रयोग पर ज़ोर देते हैं। यहाँ असली गेमचेंजर “टीचर“ हैं । एक योग्य, ट्रेन्ड, पैसनेट, अफेक्सनेट एवं अपने प्रोफ़ेशन से प्यार करने वाला टीचर पूरी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पैराडाइम को शिफ़्ट कर सकता है ।

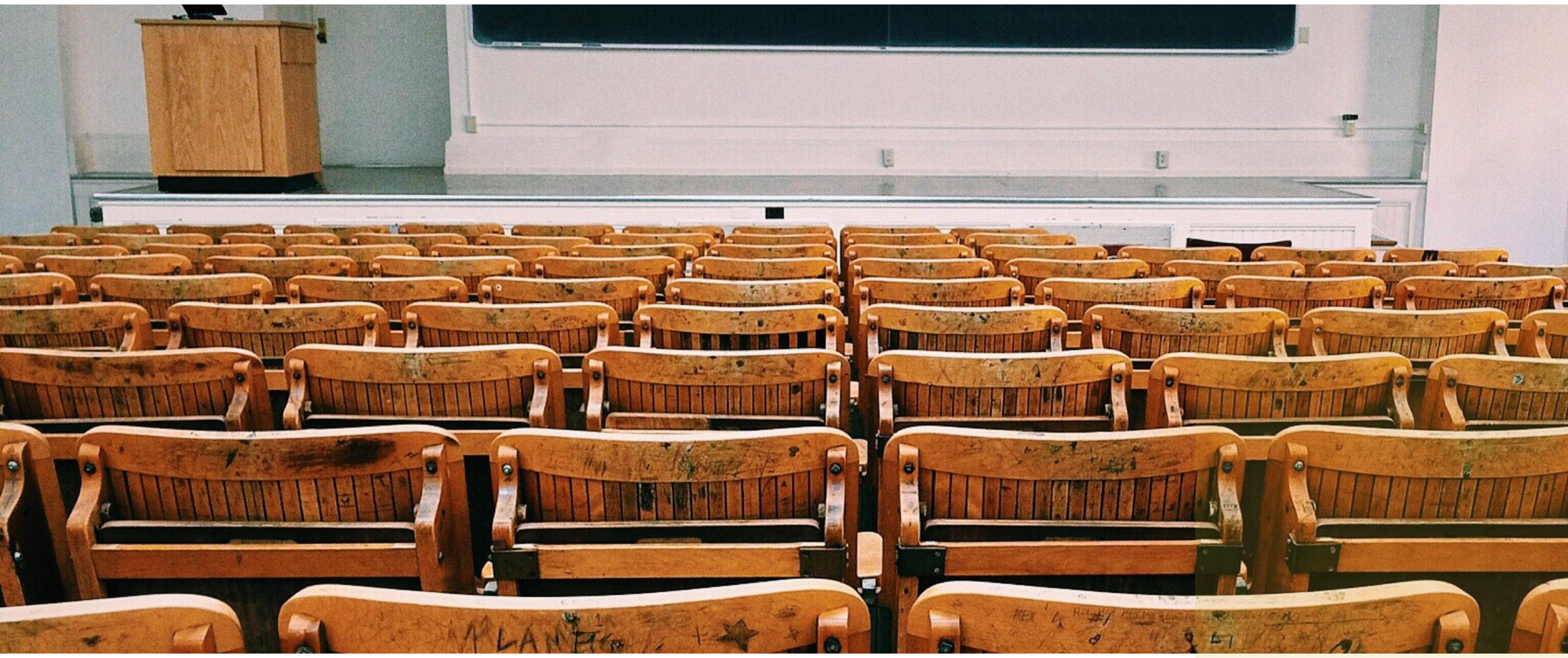

इसमें समाज, सरकार, स्कूल एवं खुद टीचरों का रोल बेहद महत्वपूर्ण होगा ।

"लॉकडाउन" का यह समय बच्चों, अध्यापकों एवं अभिभावकों तीनों के लिए गोल्डन अपरच्वनिटी लेकर आया है । सबके पास असीमित समय, घर जैसी प्रयोगशाला एवं इंटरनेट पर मौजूद दुनिया के सारे संसाधन चुटकियों में उपलब्ध हैं । बच्चों के लिए तो पूरा घर लरनिंग सेंटर हो सकता है । ई - क्लासेस, प्रोजेक्ट्स , एक्टिविटीज, फ़न, गेम्स, वीडियो शूट्स और ढेरों ऐसी गतिविधियाँ रोट लरनिंग से लॉकडाउन के इस समय हमारे घरों में हाउसकीपिंग एवं अन्य कार्य में लगे भैया, दीदी एवं हेल्पर्स भी नहीं आ रहे होंगे। क्या कभी आपने घरेलू काम करने वाले इन लोगो के बारे में सोचा है। क्या आपको अच्छा लगेगा अगर यही कार्य खुद आपको दूसरों के घर में करना पड़े ।

मैं तो यही कहूंगा कि इस स्वर्णिम समय का उपयोग आप अपनी कलाओं एवं नई-नई आदतों का विकास करने में करें। कमरे की सफाई, बेडिंग, क्लीनिंग एवं बाथरूम की वाइपिंग का कार्य अपने हाथों से करें। अलमारी से कपड़े निकालने, नहाने, पुराने कपड़ों को धोने एवं सुखाने, जूते पॉलिश करने, कॉपी किताबों की डस्टिंग इत्यादि का कार्य स्वयं करें। इससे न सिर्फ श्रम एवं मेहनत के कार्य में लगे लोगों के प्रति आपके मन में सम्मान पैदा होगा वरन् आपको शारीरिक एवं मानसिक सुख भी प्राप्त होगा ।

परीक्षाओं के बाद वैसे भी बच्चे तमाम सारी एक्टिविटीज , समर कैंप्स, आउटडोर गेम्स थिएटर, डांस, ड्रामा एवं और भी ढेरों गतिविधियों में खुद को जोड़ लेते है। मैं आपको यही सलाह दूंगा कि फुरसत के इन क्षणों में आप अपना मनपसंद शौक जरूर पूरा करें। आजकल आन-लाइन क्लासेस के माध्यम से आप म्यूज़िक, डांस, ड्रामा, वादन, गायन, भाषण, थिएटर, ड्रेस डिज़ाइनिंग, इंटीरियर डिज़ाइनिंग, ड्राइंग, पेंटिंग, रोबोटिक्स एवं अन्य कोर्सज को ज्वाइन कर सकते हैं । इनकी छोटी-छोटी विडियोज बनाकर दोस्तो एवं रिश्तेदारों को भेजें। स्कूल की वेबसाइट पर भी पोस्ट करें। अपनी रचनात्मक का उपयोग करते हुए नए-नए लिरिक्स, गीत, एल्बम एबं डायलॉग्स का सृजन करें। अपनी साहित्यिक प्रतिभा को तराशते हुए कविताएं, कहानियां, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज, चुट्कले, भाषण एवं गीत का सृजन करें।

ये गतिविधियां आपकी रचनात्मकता, सम्वेदनशीलता, उत्सवधर्मिता, सहनशीलता एवं मनुजता को तो बढ़ाती ही हैं वरन् हिंसा, तनाव डिप्रेसन एवं कुंठा भी दूर करती हैं। मेरा अगाध विश्वास है कि अगर हमारे बच्चे पढ़ाई में अव्वल होने के साथ-साथ साहित्यकार, कलाकार एवं शिल्पकार भी होंगे तो शिक्षा अपने चरम उद्देश्य को प्राप्त होगी यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि शिक्षा के उच्च पायदान पर बैठे विश्व के ज़्यादातर देशों में वही मूल विषय पढ़ाए जाते हैं जो भारत में पढ़ाए जाते हैं।

“लॉकडाउन” का यह समय बच्चों, अध्यापकों एवं अभिभावकों तीनों के लिए गोल्डन अपरच्वनिटी लेकर आया है । सबके पास असीमित समय, घर जैसी प्रयोगशाला एवं इंटरनेट पर मौजूद दुनिया के सारे संसाधन चुटकियों में उपलब्ध हैं । बच्चों के लिए तो पूरा घर लरनिंग सेंटर हो सकता है । ई - क्लासेस, प्रोजेक्ट्स , एक्टिविटीज, फ़न, गेम्स, वीडियो शूट्स और ढेरों ऐसी गतिविधियाँ रोट लरनिंग से लॉकडाउन के इस समय हमारे घरों में हाउसकीपिंग एवं अन्य कार्य में लगे भैया, दीदी एवं हेल्पर्स भी नहीं आ रहे होंगे। क्या कभी आपने घरेलू काम करने वाले इन लोगो के बारे में सोचा है। क्या आपको अच्छा लगेगा अगर यही कार्य खुद आपको दूसरों के घर में करना पड़े ।

लॉकडाउन के इस समय हमारे घरों में हाउसकीपिंग एवं अन्य कार्य में लगे भैया, दीदी एवं हेल्पर्स भी नहीं आ रहे होंगे। क्या कभी आपने घरेलू काम करने वाले इन लोगो के बारे में सोचा है। क्या आपको अच्छा लगेगा अगर यही कार्य खुद आपको दूसरों के घर में करना पड़े ।

21वीं शताब्दी क्षमता विकास और कौशल विकास की शदी है। लॉकडाउन के इस समय का उपयोग आप अपनी क्षमताओं के दोहन एवं 21वीं सेंचुरी स्किल्स के विकास में करें। वह समय गया जब रटकर 100 में से 100 नंबर लाने वाले बच्चे सबसे होनहार होते थे। अब नंबरों का स्थान स्किल्स ने ले लिया है। दुनिया की सारी कम्पनियां एवं आर्गनाइजेशन अब इनोवेटर्स, क्रियेटर्स, कोलैबोरेटर्स, कमयुनिकेटर्स, थिंकर्स, एनालाइजरस, लीडर्स, एवं सोशल स्किल्स रखने वाले वर्कर्स तलाश रही हैं। मैं बच्चों, अभिभावकों, एवं अध्यापकों से अपील करूंगा कि इस समय का उपयोग वे अपनी क्षमताओं का विकास करने में करें। माता-पिता एवं उनके स्कूलों से मेरा निवेदन है कि इस समय बच्चों को उन गतिविधियों में शामिल करें जिनसे उनमें कम्युनिकेशन स्किल्स, लीडरशिप, एवं टीम भावना विकसित हो सकें।

थियेटर, ड्रामा, रोल प्ले, स्टोरी टेलिंग, रीडिंग, राइटिंग, गेम्स आदि के माध्यम से 21वीं सेनचुरी स्किल्स का पूरा विकास किया जा सकता है। घर में ही मिनी संसद, न्यायालय, प्रेस कांफ्रेंस, पंचायत, चौपाल, क्लासरूम, अस्पताल, डाकघर, फ़ैक्ट्री, मार्केटिंग, सेल्स एवं बाज़ार के सीन क्रिएट करें एवं रोल प्ले करें । इनकी वीडियो रिकार्डिंग करके बार-बार अपनी परफ़ॉर्मेंस को दुरुस्त करें । मैं आपसे यह भी निवेदन करूँगा कि अपनी रूचि के क्षेत्र में रिसर्च एवं अनुसंधान को अवश्य बढ़ावा दें । छुट्टियों के इस माहौल में कोई न कोई इनोवेशन/ आविष्कार अवश्य करें । आपके छोटे-छोटे प्रयोग ही आगे चलकर आपको एडिशन एवं आइंस्टाइन की क़तार में खड़ा करेंगे ।

पूरी दुनिया 21वीं शताब्दी को डिजिटल क्रांति के रूप में याद कर रही है । इस दुनिया में सफल होने के लिए एवं चोटी पर रहने के लिए आपको हर क्षण बदलती टेक्नोलॉजी से अपने कोअपडेट रखना होगा। “लॉकडाउन” के इस समय का उपयोग सबसे ज्यादा डिजिटल माध्यमों से हो सकता है। इस समय देश के ज्यादातर सीबीएसई स्कूलों ने ऑनलाइन क्लासेस प्रारंभ कर दी हैं।

एच आर डी मिनिस्ट्री के दीक्षा प्लेटफार्म पर सीबीएसई ने अधिकतर विषयों के ई-कंटेंट लांच कर दिए हैं। गूगल क्लासरूम, खान एकेडमी, बाईजू जैसे अनेक ऐसे प्लेटफार्म है जिनका उपयोग करके स्कूल एवं बच्चे अपनी पढ़ाई शुरू कर चुके हैं। इस अवसर पर मैं बच्चों और अध्यापकों दोनों से अपील करूंगा कि बच्चों को प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, एक्टिविटिज एवं ई-कंटेंट तत्काल ऑनलाइन माध्यम से भेज दें जिससे बच्चे उनका भरपूर उपयोग कर सकें। मैं बच्चों को यह भी बताना चाहूंगा कि एच आर डी मिनिस्ट्री ने स्वयंम पोर्टल एवं स्वयंम प्रभा चैनल के माध्यम से डिजिटल लर्निंग मैटिरियल और अवसर उपलब्ध कराएं हैं। हमें इस कठिन समय को एक अवसर में बदलते हुए देश के हर घर को लर्निंग एवं स्किल सेंटर के रूप में बदल देना चाहिए। स्कूलों, अध्यापकों एवं अच्छी शिक्षा की कमी से जूझते देश को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए एवं फिजिकल क्लासरूम से उठकर डिजिटल क्लासरूम को तेजी से बढ़ावा देना चाहिए। कल्पना कीजिए जब एक उत्कृष्ट अध्यापक डिजिटल क्लासरूम के द्वारा हजारों बच्चों को एक साथ सिखा रहा होगा तो बुक्स, कंटेंट, स्कूल एवं अच्छे टीचर की कमी सदा के लिए खत्म हो जाएगी।

आइए लॉकडाउन के अवसर का लाभ उठाते हुए बच्चों को मुस्कुराने का मौका दें और एक भारत श्रेष्ठ भारत के सपने को साकार करें।

In Focus

INNOVATIVE LEADERSHIP - JACINDA ARDERN

BY DR PRAVEEN KUMARI

While it is a matter of perennial debate as to whether leaders are born or made, history is replete with examples of leaders who demonstrated exceptional leadership skills to overcome challenging times faced by organizations, people and countries. The “leadership-styles” of these “personalities” had in common that special and unique touch which strikes a chord with people inspiring them to rise above the constraints imposed upon them by their socio-cultural, economic or political milieu. The Corona pandemic, arriving like a Tsunami and affecting every part of the world, has overwhelmed governments and leaders at the helm of affairs with everyone keenly watching and scrutinising their response. Against this back drop, truly inspiring has been the exemplary performance of women leaders such as the Norwegian Prime Minister Erna Solberg, the Prime Minister of Iceland, Katrin Jakobsdottir, Taiwanese President Tsai Ing-Wen, German Chancellor Angela Merkel and New Zealand’s Prime Minister Jacinda Arden. Not only have their respective countries accepted these leaders as true “Saviours”, these leaders have also earned global acclaim for their deft handling of the Covid crisis. A closer look will reveal that along with attributes like a pragmatic approach, direct communication and willingness to listen to expert advice, compassion and empathy are the key markers of their leadership style. Their performance is even more noteworthy considering that women leaders constitute merely seven per cent of the total number of world leaders.

In Focus is New Zealand’s young Prime Minister, Ms. Jacinda Arden, whose “out of box” legislative and policy measures in recent times have not only been courageous and egalitarian but also inspiring as well as innovative. She has acted like a world stateswoman bringing hope to millions and putting forth solutions resonating with current issues confronting the world. Rising from a humble background, her personal journey has been incredible. Born in 1980 to working class parents - mother who worked as a catering assistant in school and father who was a police officer, she grew up believing her gender could never stand in the way of her achievements or in determining her life choices. This attitude itself is an enabler when gender as a barrier stands in the way of aspirations of billions of women across the world. This confidence can also be attributed to socio-cultural and political

environment of New Zealand which is much more sensitive to gender issues as compared to our part of the world. This is evident in the country having produced three women Prime Ministers in the past.

What sets Ms. Adern apart is her sense of conviction which made her take a principled stand on issues from an early age. While in school, she campaigned and convinced her school administration to allow girls to wear pants. She became the second female Head of State in the world after Benazir Bhutto to give birth while in office. Three months after the birth of her daughter when she had to represent her country in the UN, she made history by ensuring that her daughter and partner got a seat in UN assembly, thus proving to the world how personal and professional responsibilities can be effectively managed together, without the detriment of either.

A graduate in politics, Ms. Adern has used politics as a serious tool for attaining the cherished goals of justice, equality, liberal values, and dignity of all sentient beings, and has declared that the intent of her government is Pursuit of Kindness. This sounds so calming and refreshing coming from a political leader when all around the world the clamour is for pursuit of material gains and power. This intent is evident in the bold steps that her government has taken. New Zealand has declared a work week of 4 days to achieve real work life balance. In 2019, her Government presented the first Well Being Budget prioritizing well-being over economic growth and moving away from GDP as the sole indicator of a nation's prosperity. It is based on the premise that GDP alone does not paint a full picture of the prosperity of a nation and

its people,as it does not indicate how citizens feel about social connections, sharing of economic prosperity, and the feel good and happiness factors. Though such an approach has also been attempted by countries like Bhutan, the New Zealand approach is innovative as it also has components of Living Standards Framework. LSF are a practical set of meaningful well being indicators to guide policy in 12 domains such as civic engagement and governance, subjective well being, environment, health, cultural identity, time use , social connections etc. These indicators speak volumes about the leader and her priorities. Granting the Whanganui River the legal rights of a Human Being is a great step forward in environmental conservation. As per 2017 Te Awa Tupua (Whanganui Rivers Claims Settlements) Act , the river is treated as if it were a Maori Ancestor, an indivisible and living whole comprising all its physical and metaphysical elements.

Equally remarkable is her advocacy of the rights of marginalized people. She left the Church when it took a discriminatory stand on gay rights issues and became the first Prime Minister to take part in the Pride Parade in Auckland. Her Government passed a law banning all military style automatic guns and assault rifles after instances of violent shooting.

Her handling of the Corona Crisis has similarly been very effective resulting in New Zealand reporting only nine deaths before it was declared COVID19 free, at a time when the rest of the world continues to grapple with the crisis with no relief in sight. She displayed leadership imbued with awareness, a clear strategy and action plan and transparent communication based on facts and scientific evidence. Her approach combined both concrete action and required symbolism. No wonder that with a 59.5 percent positive vote, she has been declared the most popular Prime Minister of New Zealand.

ONE OF THE CRITICISMS I'VE FACED OVER THE YEARS IS THAT I'M NOT AGGRESSIVE ENOUGH OR ASSERTIVE ENOUGH, OR MAYBE SOMEHOW, BECAUSE I'M EMPATHETIC, IT MEANS I'M WEAK. I TOTALLY REBEL AGAINST THAT. I REFUSE TO BELIEVE THAT YOU CANNOT BE BOTH COMPASSIONATE AND STRONG.
- JACINDA ARDERN

In Ms. Adern's own words, the true measure of leadership is its ability to confront the anxiety of the people of its time. Going by this measure, she has amply proved herself to be one amongst the few true leaders that the world has today.

कोविड-19 काल के कुछ मानवीय पहलू

BY AWADESH KUMAR

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे,
मारकर औरों को जीना, यह बड़ा घृणित कर्म है,
काम आना दूसरों के, यही तो मानव-धर्म है.

24 मार्च, 2020 की रात्रि प्रधानमंत्री का राष्ट्र के नाम संबोधन और उसी मध्य रात्रि से सम्पूर्ण भारतवर्ष में लॉकडाउन की घोषणा. कोविड-19 की इस विश्वव्यापी संक्रामक बीमारी के भयावह प्रवाह को रोकने के निमित्त की गई इस अपूर्व घोषणा से सम्पूर्ण जन-जीवन जहाँ-का-तहाँ ठहर गया. जो जहाँ था, जिस स्थिति में था, वहीं थम कर रह गया.

विविधताओं से परिपूर्ण इस देश में आर्थिक असाम्य अप्रत्याशित रूप से दृष्टिगत होने लगा. यह तो सभी को विदित है कि देश की एक बहुत बड़ी आबादी अपनी नित्यप्रति की कमाई के सहारे अपना जीवनयापन करती है. बहुत से लोग खुले आसमान को ही घर समझ कर जीवन व्यतीत करते रहते हैं. ऐसी आबादी के लिए रेलवे प्लेटफॉर्म विषम मौसम में आश्रय का काम करते हैं. इस देश की एक अच्छी-खासी आबादी भिक्षाटन पर निर्भर करती है. किसी भी धर्म-स्थल पर आप ऐसे दरिद्र नारायणों की जमातों के सहज दर्शन कर सकते हैं. इनके साथ ही, एक बड़ी आबादी ऐसी भी है, जो छोटे-मोटे रोजगार करके अपना एवं अपने परिवार का भरण-पोषण करती है.

ऐसे में जब देश में अकस्मात् लॉकडाउन की घोषणा हो जाए तो भुखमरी की समस्या अवश्यंभावी हो जाती है. तमाम सरकारी प्रयत्नों एवं छोटी-बड़ी धार्मिक व गैर-सरकारी स्वयंसेवी संस्थाओं की इस विषम परिस्थिति से लड़ने की कोशिशों के बावजूद भी बहुत सारे लोग शहर के किसी छोर पर इस स्थिति से बेखबर भगवान से आस लगाए आसमान में टकटकी लगाए रह ही जाते हैं. ऐसे लोगों का ही सहारा बनकर उनके संरक्षक के रूप में उभरकर आए हमारे रेल परिवार के लोग. उत्तर मध्य रेलवे के तीनों मण्डलों के लोगों ने कार्मिक विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की देखरेख एवं कुशल निगरानी में ऐसे लोगों की क्षुधा-तृप्ति एवं अन्य आवश्यकताओं की आपूर्ति का बीड़ा उठाया.

आगरा देश के संक्रमित शहरों की सूची में बहुत ऊपर रहा है. यहाँ प्रारम्भ से ही कोविड-19 से संक्रमित लोगों का पता चलना शुरू हो गया. अतः यह देश के अत्यधिक दुष्प्रभावित शहरों में से एक रहा है. स्वाभाविक रूप से लॉकडाउन की अप्रत्याशित घोषणा ने यहाँ के जन-जीवन को भी ठप्प कर दिया. लोगों के सामने खाने व जान बचाने तक की समस्या खड़ी हो गई. ऐसे में आगरा मण्डल के रेल कर्मियों ने अपने सरकारी दायित्वों के साथ-साथ असहाय लोगों को सहारा देने का भी बीड़ा उठाया तथा इस क्रम में 300 कुलियों/सफाई कर्मचारियों/वेंडरों इत्यादि को आवश्यक राशन सामग्री (आटा, चावल, दाल, तेल, नमक, मसाला इत्यादि)

वितरित किया. साथ ही, लाकडॉउन अवधि में कार्मिक शाखा के कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षकों द्वारा रेल कर्मचारियों से व्यक्तिगत संपर्क साधा गया तथा जरूरतमंद परिवारों तक आवश्यक दवाओं की व्यवस्था उनके घर पर ही कराई गई। साथ ही, कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षकों द्वारा नियमित रूप से कर्मचारियों से फोन के माध्यम से संपर्क किया जाता रहा तथा उनके व उनके परिवार में कोरोना संक्रमण से संबंधित जानकारी समय समय पर प्राप्त की जाती रही. सभी सम्पर्क व यातायात के साधनों के बंद होने के बावजूद भी कार्मिक विभाग के कल्याण निरीक्षकों द्वारा मार्च, अप्रैल तथा मई माह में सेवा निवृत्त होने वाले कर्मचारियों से संपर्क किया गया तथा उनके समापन भुगतान संबंधी औपचारिकताओं को पूर्ण करते हुए सबका भुगतान समय से सुनिश्चित किया गया. इसके अतिरिक्त कार्मिक शाखा द्वारा कुल 200 मास्क भी वितरित किए गए एवं कार्यालयों को सेनेटाइज भी करवाया गया. कार्मिक विभाग अपने कर्मचारियों के निरंतर संपर्क में रहा तथा उनके वेतन भुगतान के साथ-साथ तमाम तरह की असुविधाओं को दूर करने का प्रयास करता रहा. होम्योपैथिक दवा आर्सेनिक एलबम-30 का इस अवधि में कार्मिक शाखा के नेतृत्व में रेल कर्मियों के मध्य वितरण किया गया।

भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, आगरा द्वारा भी अनेक सराहनीय कार्य संपादित किए गए तथा लोगों के मध्य जागरूकता अभियान चलाए गए. झाँसी, मथुरा,

आगरा तथा धौलपुर में लगभग दस हजार गरीब असहाय लोगों के मध्य खाना, बिस्कुट, चाय तथा आवश्यक राशन सामाग्रियाँ वितरित की गईं. भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के कार्यकर्ताओं द्वारा आगरा एवं मथुरा स्टेशनों पर श्रमिक स्पेशल के यात्रियों को जल-सेवा भी प्रदान की गई. प्रयागराज मंडल ने भी इस दौरान यात्रियों, रेल से जुड़े गैर-रेलकर्मियों तथा अन्य अरक्षित- असहाय लोगों की सेवा में महती भूमिका का निर्वहन किया.

प्रयागराज मंडल के कल्याण अनुभाग द्वारा कोविड-19 के संक्रमण के मद्देनजर प्रभावित असहाय व गरीब लोगों की मदद हेतु दिनांक 31.03.2020 को प्रयागराज मंडल रेल राहत कोष की स्थापना की गई. इस राहत कोष में मंडल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वैच्छिक अंशदान के माध्यम से योगदान किया गया तथा अनेक कल्याणकारी कार्यो का निष्पादन आपसी सहयोग से किया गया.

प्रयागराज शहर के विभिन्न स्थानों यथा- हनुमान मंदिर व डी.एस.ए. ग्राउन्ड के समीप स्थित झुग्गी-झोपड़ियों में कुष्ठ रोगियों की बस्तियों में तथा प्रयागराज मंडल द्वारा खुसरोबा के समीप गोद ली गई गरीब बस्ती में निवास कर रहे असहाय व्यक्तियों के मध्य दिनांक 30.04.2020 तक स्थानीय जिला प्रशासन के समन्वय व अनुमति के साथ कुल 4413 फूड पैकेटों का वितरण किया गया. खाद्य सामग्री मंडल कार्यालय स्थित मंडल कैंटीन के कर्मचारियों द्वारा आवश्यक सावधानियाँ एवं मानदण्डों को सुनिश्चित करते हुए खाद्य-सामग्री को तैयार की गई थी.

प्रयागराज में गरीबों एवं असहायों की मदद हेतु कुष्ठ आश्रय, भारत सेवाश्रम, डी.एस.ए. ग्राउन्ड एवं पत्थर गिरजा घर सिविल लाइंस के समीप की बस्तियों में लॉकडाउन के दौरान 227 राशन किट का वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त इटावा से लेकर खुर्जा तक के 8 स्टेशनों पर कुलियों के परिवारों को भी 155 राशन किट उपलब्ध कराया गया.

रेल कर्मचारियों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने हेतु रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार एवं आयूष मंत्रालय द्वारा निर्धारित
आयूष काढ़ा का वितरण मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के मध्य दिनांक 4.6.2020 से किया जा रहा है। साथ ही मंडल के अन्य स्टेशनों पर कार्यरत रनिंग कर्मचारियों आदि को भी आयूष काढ़ा उपलब्ध कराने हेतु निर्देशित किया गया है. मण्डल कर्मचारी हित निधि के माध्यम से कोरोना की कठिनतम स्थिति में लॉकडाउन के दौरान प्रयागराज मण्डल के समस्त विभागों में फील्ड पर हर खतरा उठाते हुए कार्यरत रेल कर्मचारियों के मध्य 115000 कॉटन रियूजेबल फेस मास्क का वितरण किया गया।

होम्योपैथिक दवा आर्सेनिक एलबम-30 का वितरण प्रयागराज, कानपुर एवं टुण्डला में 8913 कार्यरत रेल कर्मियों के मध्य किया गया. यह होम्योपैथिक दवा मण्डल कर्मचारी हित निधि के द्वारा संचालित होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी के माध्यम से उपलब्ध करायी गयी.

प्रत्येक रेल कर्मचारी को आरोग्य सेतु मोबाइल ऐप अनिवार्य रूप से डाउनलोड एवं इंस्टाल करने के लिए निर्देशित किया गया. साथ ही प्रयागराज मण्डल के अंतर्गत कार्यालयों में प्रवेश के पूर्व आरपीएफ एवं कल्याण निरीक्षक द्वारा कर्मचारियों की थर्मल स्क्रीनिंग की जा रही है तथा बिना फेस मास्क के किसी भी व्यक्ति का कार्यालय में प्रवेश वर्जित किया गया है. सभी कर्मचारियों को सोशल डिस्टेंसिंग के अनुपालन हेतु विशेष रूप से निर्देशित किया गया है.

कार्मिक विभाग द्वारा मण्डल के समस्त रेल कर्मचारियों को संक्रमण से बचाव हेतु आवश्यक दिशानिर्देश के रूप में कोविड-19 प्रोटोकॉल समय समय पर जारी किया गया है. फ्रंटलाइन पर खतरा उठाकर काम करने वाले कर्मचारियों को कोरोना योद्धा घोषित करते हुए बैज देकर सम्मानित किया गया है. कर्मचारियों को कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु जागरूक करने के लिए विभिन्न संदेश प्रसारित कराये गए. कार्मिक विभाग प्रयाग राज मण्डल द्वारा कोविद-19 के संक्रमणकाल में सतत् एवं सक्रिय कार्य सम्पादित किये गए.

उत्तर मध्य रेलवे के कार्मिक विभाग, झाँसी द्वारा भी कोविड-19 के दौरान अनेक गतिविधियों का संचालन किया गया.

झाँसी मंडल के कार्मिक विभाग के सदस्यों ने श्रमिक स्पेशल के यात्रियों के लिए करीब 5000 खाने के पैकेट का इंतजाम किया और इसका वितरण इस प्रकार किया गया कि एक पूरी ट्रेन के यात्रियों के लिए व्यवस्था की जा सके क्योंकि झाँसी स्टेशन में कई लम्बी दूरी की श्रमिक स्पेशल आ रही थी. इस कार्य में कार्मिक परिवार के सभी सदस्यों ने सश्रम अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं रेलवे स्टेशन परिसर में वितरण का कार्य किया गया.

कल्याण निरीक्षक एवं रेलवे स्काउट के सदस्य रेलवे कॉलोनियों में रेल कर्मचारियों के परिवारों से घर-घर जाकर मिले. उनका तापमान लिया गया एवं उन्हे आरोग्य सेतु ऐप की जानकारी दी गयी. उन्हे कोरोना से बचाव के उपाय, लॉकडाउन का पालन करने एवं सामाजिक दूरी बनाये रखने की सलाह को मानने के लाभ बताये गये. निरीक्षकों द्वारा परिवार के सदस्यों को सेनिटाइज किया गया एवं सेनिटाइजेशन का महत्व समझाया गया.

इसी तरह झाँसी मंडल के रेलवे हास्पिटल में भी कार्यक्रम संचालित किया गया, जिसमें कोरोना से बचाव के तरीकों से अवगत कराया गया. मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय झांसी के गेट पर भी हमारे कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षकों द्वारा हर आने वाले कर्मचारी एवं आगंतुक की टेम्परेचर स्क्रीनिंग एवं उनके वाहनों का सेनिटाईजेशन किया जा रहा है. बिना टेस्टिंग के कार्यालय में प्रवेश की अनुमति किसी को भी नही दी जा रही है. झाँसी क्षेत्र के रेलवे के क्वारंटाइन सेंटर को व्यवस्थित करने एवं मॉनिटरिंग के लिए कार्मिक विभाग के कल्याण निरक्षकों की टीम ने विशेष योगदान दिया.

कोरोना महामारी से बचाव के लिए स्वयंसेवियों की टीम बनाने में कार्मिक विभाग ने सहायता की जिसके द्वारा कर्मचारी या उनके परिवार के सदस्य जो इस महामारी के दौरान श्रमदान को तैयार हों, उनकी पहचान की जा सके. कार्मिक विभाग द्वारा सभी कर्मचारियों की जानकारी के लिए कोरोना से बचाव के सम्बन्ध में मंडल रेल प्रबंधक के निर्देशन में विशेष विडियो एवं प्रेजेंटेशन बनाया गया जो डिजिटल मीडिया द्वारा सभी कर्मचारियों में वितरित किया गया.

इस प्रकार, उत्तर मध्य रेलवे के कार्मिक विभाग द्वारा पीड़ित व जरूरतमंद लोगों को प्रदान की गई सेवाओं की जितनी भी सराहना की जाये, कम है। इस आपदा ने मानवता की सेवा की छुपी मानवीय भावना को भी उभारा और यह सिद्ध किया कि,

वृक्ष कबहूँ नहीं फल भखै, नदी न संचय नीर,
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर.

COVID-19 AND OGS

by Abhishek Kesarwani

Nestled in the lap of the mighty Himalayas, the Oak Grove School, Jharipani, Mussoorie, has been a pioneer residential school of Indian Railways providing quality education to the children of Railway employees since 1888. Though the school was started as a welfare measure, it has been able to do justice to the faith reposed in it by the Railways on the education front. The school is very popular, especially among the railway employees and the demand for admission is very high as compared to the number of students it can accommodate.

The alumni of the school have gone on to excel in various fields across Civil and Defence administration and have made the school proud besides making a mark for themselves.

In the face of COVID-19 pandemic, the administration faced a different kind of challenge which included safe and secure boarding of almost 575 students who stay, study and dine in close proximity with each other. Though the students were confined within the perimeter of the school premises, there was always a chance of an infection creeping in through the families of the support staff that is taking care of them in mess,in classes and in the dormitories.

While a decision on whether or not to close the school was being contemplated upon separately by the State Administration, the school administration and the Northern Railway Headquarters, the time was well utilized by educating the students about the nuances associated with the spread of Corona Virus. Separate awareness sessions with the students, teachers and support staff of all the three schools were conducted by the Principal, Heads and the School Doctor in the common assembly places. They were shown PPTs and videos on how to protect themselves through self-hygiene and each student was provided with a personal soap-kit. The number of liquid soap dispensers were increased and posters exhibiting ways of practicing self-hygiene were put in dormitories, toilets and all the conspicuous places. Also, sufficient number of masks and hand sanitizers were made available at the disposal of the dormitory supervisors and they were specially trained the usageof the same by health unit staff.

The school administration was not only responsible for the safety of students but also its hundred-odd staff, most of them residing with their families in the school premises. A meeting of all stakeholders was called and comprehensive guidelines for staying within the premises and a protocol for entry and exit from the main gate was issued, ensuring in a largely safe campus. Necessary equiptments such as masks, hand sanitizers and thermal scanners were provided at the main gate and strict entry and exit restrictions were put in place even before the official lockdown was announced.

While the state government maintained a silence on closure of boarding schools, the Oak Grove School administration decided to send all the students back to their homes on receiving timely and critical nod from the headquarters on 18th March, 2020. The ensuing session was immediately suspended and all the parents

were advised to take back their wards to their respective homes within 24th March. This exercise was a Herculean one and certainly not as easy as it sounded. The entire school administration along with matrons, dormitory supervisors, House Keepers, House Masters and Heads was on its toes for the next seven days, calling each parent individually, ensuring the packing of students' belongings and safe collection of students by their parents. When the rush increased from the third day, the parents requested to drop a group of students at Dehradun Railway Station by school vehicle as not many vehicles could be parked at the main road outside the school main gate while they were waiting for their wards. Multiple trips of school bus and school vehicles were arranged to drop groups of students at Dehradun Railway Station with proper escorting and recordkeeping. Only 4 students belonging to Bihar, Tamilnadu and Puducherry could not becollected by their parents within given time. They were taken good care of by the school and were made to feel at home by the special efforts of all. They were later picked up by their parents and guardians; the last student being taken back in the mid of May, 2020.

Though the students had reached their home safely, another challenge was to keep the staff and their Families residing within the school campus, safe. The restrictions at the main gate continued for this purpose, even at the cost of displeasure of a few. The teaching staff were immediately made to change gear and start with online classes.This was a major paradigm shift, especially for the permanent teaching staff but the school administration was pleasantly surprised to see all teaching staff rising to the occasion and adapting to the new teaching methodologies and online interactions with the students. The online teaching was formally started on 1st of April 2020 and more professional aspects were added to the adopted methodologies in a phase-wise manner.

By 1st May, 2020, the entire school had shifted to Google Classroom and Google Forms for teaching and interacting with the students. The same was adapted to and taken well by the students and more than 95% of students attended regular online classes and took the first assessment test in April, 2020 and the first periodic exam in May, 2020. After the current vacations end on 30th June, it has been planned that regular and interactive classes will be taken by the teachers as per fixed timetable. During the vacations, the Computer Labs of the school are being fully equipped to facilitate online classes by procuring peripherals such asweb cameras and graphic tablets etc. A proposal to provide Laptops to all teachers is also under consideration.

Oak Grove School has always set high standards of education for its students resulting in a few CBSE Board toppers in the recent past. Its academic and institutional culture has been nurtured beautifully by some of the excellent IRPS officers who have led this institution with panache. The school is loved by one and all who have visited and stayed here and is prospering with the good wishes of all associated with it and also the untiring efforts of the teaching and non-teaching staff who are the real pillars behind its lasting glory.

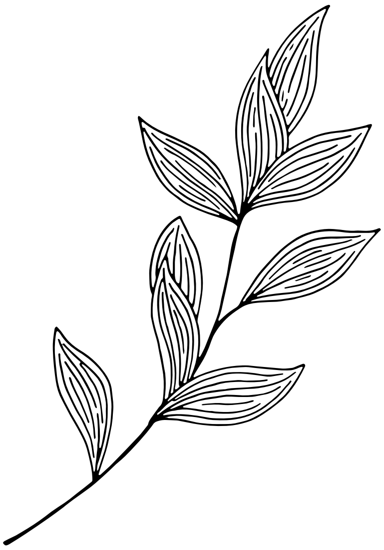

रिहा

BY RAHUL SHRIVASTAVA

दिसंबर 1961 जब सारा गोवा पुर्तगालियों के जाने का और आजादी का जश्न मना रहा था पीटर डिसूजा सेंट्रल जेल के बाहर सड़क किनारे परेशान बैठा हुआ था।

उसे यह आज़ादी बिल्कुल रास नहीं आ रही थी। अंकल पीटर, जैसा कि उसके जेल के साथी उसे संबोधित करते थे पिछले 37 सालों से अग्वदा जेल में कैद था। जब उनको पुर्तगालियों ने पकड़ कर जेल में डाला तब महज 20-22 साल की उम्र रही होगी। पीटर का परिवार समुद्र किनारे एक छोटे से गांव में रहता और मछली पकड़ कर अपना गुजर बसर करता। लेकिन पीटर को मछली से ज्यादा बड़े जहाजों को देखने में मजा आता था। ऐसे ही कभी किसी जहाज को देखने के चक्कर में उसे अंग्रेजों का एजेंट समझ पुर्तगालियों ने जेल में डाल दिया। गांव में किसी को कानो-कान खबर न हुई और पीटर बिना जमानत, बिना कचहरी, बिना सुनवाई जेल में ही पड़ा रहा। कुछ सालों में वह जेल का एक मुख्य हिस्सा हो गया।

पीटर को यकीन था कि वह यहाँ से अब कभी नहीं निकल पाएगा इसलिए उसने इस जेल की चारदीवारी को ही अपनी दुनिया समझ लिया और कैदियों को अपना परिवार। पीटर को पुस्तकें पढ़ने का शौक था और इस आदत के चलते उसका जेल में सम्मान किया जाता था। जरूरत पड़ने पर जेल प्रशासन के कर्मचारी भी हिसाब किताब में उसकी मदद लेते। धीरे-धीरे उसकी विश्वसनीयता इतनी बढ़ गई कि वह रोज मेस ऑफिस जाता और राशन खर्चे का हिसाब करता और महीने के अंत में सारे बिलों को तैयार करता। जेल में होने वाले कैदियों के बीच के छोटे-मोटे विवाद भी उसकी राय से सुलझा लिए जाते क्योंकि उसके फैसले का सभी सम्मान किया करते। जेल के भीतर वह पूरी तरह से स्वच्छंद था।

लेकिन गोवा की आजादी का जश्न ऐसा मना कि लोगों ने सेंट्रल जेल को भी खोल दिया और दफा 302 के कैदियों को छोड़कर बाकी सब को रिहा कर दिया गया। सभी अपने घरों को जाने के लिए आजाद थे। लेकिन पीटर डिसूजा को याद ही नहीं पड़ता था कि उसका घर कहां था। इन 37 सालों में उसे किसी ने पूछा तक नहीं ऐसे घर में अब उसे कौन पहचानेगा। उसकी उम्र 60 की दहलीज पर पहुंच ही रही थी। जैसे कबूतर पिंजड़ा खोलने पर भी वापस पिंजरे में ही आ जाता है पीटर का भी मन कर रहा था वापस जेल में चला जाए। उसे पता ही नहीं था कि बाहर की दुनिया में इतनी बेतरतीबी और कलह है। वह जहां भी जाता उसे शोर-शराबा, लोगों का चिल्लाना और लारी-ताँगे की आवाज परेशान करती। ऐसा लगता उसे किसी कंक्रीट मिक्सर में डाल दिया गया हो जहां गिट्टी की खड़खड़ के अलावा और कुछ सुनाई ही ना देता हो। सारा दिन वह शहर में शांति की तलाश में घूमता फिरा लेकिन उसे जेल जैसा सुकून कहीं नही मिला।आजाद होकर भी वह मुक्त नहीं हुआ था। उसकी आत्मा और मन वही जेल में बना हुआ था।

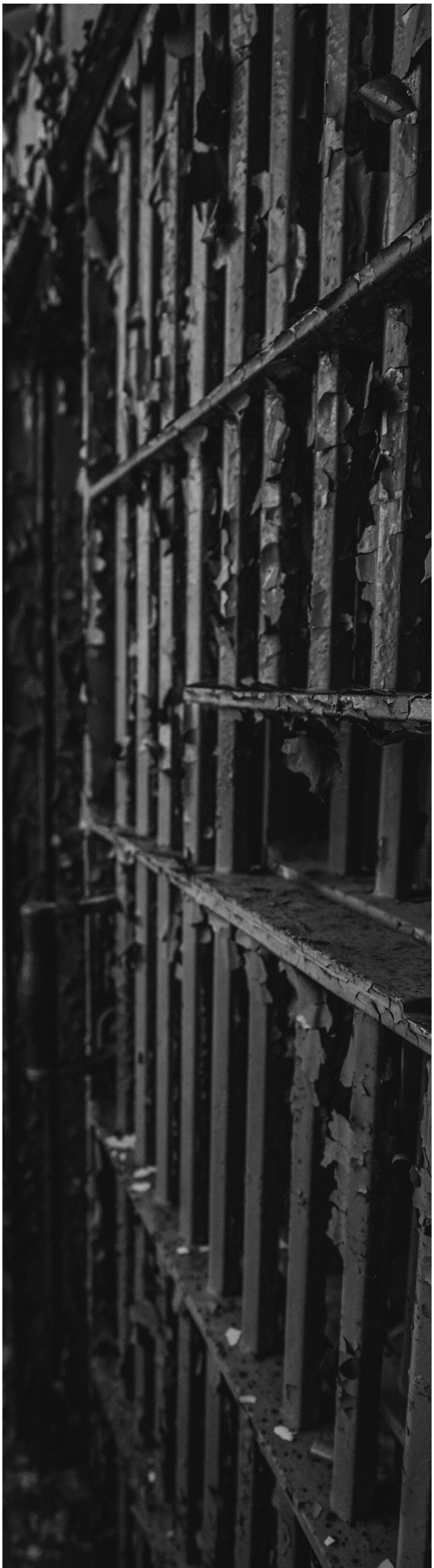

जेल की जिंदगी ही उसे जिंदगी लगती थी बाहर की दुनिया उसके लिए खौफनाक थी।रात होते-होते आख़िर उसकी तलाश एक कब्रिस्तान में जाकर पूरी हुई जहां उसे तकलीफ देने वाला कोई नहीं था। वो वहीं रात भर एक कब्र के सहारे पड़ा रहा। सुबह किसी के जूते की ठोकर से उसकी नींद खुली। वह कब्रिस्तान का चौकीदार था जो लगातार बड़बड़ाए जा रहा था। पीटर को कुछ समझ नहीं आया कि चौकीदार उसके साथ ऐसे क्यों पेश आ रहा है। उसने कब्रिस्तान से बाहर निकलना ही बेहतर समझा और खाने-पीने की तलाश में शहर की गलियों में भटकने लगा। कुछेक दुकानदारों ने उसकी शक्ल और हालत पर तरस खाकर कुछ खाने को दे दिया। किसी तरह वह अपने रात के खाने का भी इंतजाम कर शाम तक वापस कब्रिस्तान पहुंच गया।

इस जगह के अलावा उसे शहर में कहीं अच्छा ही नहीं लगता था। चौकीदार किनारे अपनी छोटी सी टीन की छप्पर में फेनी पिए हुए लुढका हुआ था। पीटर भी एक नई कब्र के सहारे लेट कर आसमान देखने लगा। उसे बस अपनी जेल में बिताई जिंदगी ही ध्यान में आती। कितना खुश और सम्मानित व्यक्ति था वह। जेल में! उसकी एक पहचान थी। लोग उसकी बातों को सुनते थे। पर बाहर की इस दुनिया में उसकी कोई पूछ नहीं थी। उसे अपना अस्तित्व एक आवारा कुत्ते से भी बदतर जान पड़ता। पता नही कब उसकी आँख लग गई। अगली सुबह चौकीदार ने उसे झकझोर कर उठाया। जूते नहीं मारे। शायद उसे भी दया आ गई हो। पीटर शहर की ओर चल दिया। यह क्रम यूं ही कुछ महीनो तक चलता रहा। चौकीदार को भी अब उसकी आदत सी हो गई थी। रोज सुबह वह पीटर को जगाकर ही अपने घर जाता।

एक सुबह पीटर कब्रिस्तान में नहीं मिला। चौकीदार ने चारों तरफ देखा। फिर बाहर आकर कब्रिस्तान की दीवार से लगी हुई फूलों की दुकान में पूछा तो पता चला थाने के लोग पीटर को उठा ले गए हैं। चौकीदार को पता नहीं क्या सूझा वह थाने पहुंच गया। पीटर डिसूजा लॉकअप के अंदर बंद था। उसके चेहरे पर चिंता की एक लकीर तक न थी ऐसा लग रहा था उसे उसकी मंजिल मिल गई हो। लॉकअप में बैठा वह रोशनदान की तरफ ताक रहा था। चौकीदार के पूछने पर सिपाही ने बताया कि उसने एक कारोबारी की दुकान से कुछ जूते चुराए हैं। लेकिन इसके पास से कुछ बरामद नहीं हुआ, न ही ये कुछ बता रहा है।

थानेदार ने पूछा कि क्या तुम इसकी जमानत कराने आए हो ? चौकीदार ने कुछ जवाब नहीं दिया बस भीतर लॉकअप की ओर देखने लगा। पीटर आवाज सुन कर खड़ा हो गया था और दोनों हाथ जोड़े हुए उसे कातर आंखों से निहार रहा था। शायद उसकी तलाश पूरी हो चुकी थी। शायद वह आजाद हो चुका था।

GHATS OF BANARAS

BY LILY PANDEYA

City of light, between earth and heaven
Older than history, older than tradition
Worldly yet transcendent, warped in cosmic space and time
Abode of Shiva, the primal being divine
Cradling the immanent and the manifest
Dawn of creation, on the Ghats of Banaras

Awakening to chant of hymns, wafting incense
The morning splendor, a festival of reverence
Mystic spirituality revealing the truth of the ages
Meanings and sermons and wisdom of sages
First rays of sun on the arc of life
A joyous celebration, on the Ghats of Banaras

Ascent of souls from the smoldering pyres
Cremating their bodies, egos and desires
Liberated from the grind of material existence
Imploring the gods for the bliss of deliverance
Aglow in the radiance of absolute consciousness
Ultimate salvation, on the Ghats of Banaras

Elixir of life, bestowing gift of abundance
The holy Ganga, a cascading exuberance
Immersing dregs of living and ashes of dead
Cleansing and healing and surging ahead
The mesmeric light of a myriad lamps
Offering adoration, on the Ghats of Banaras

JULY 2020 VOL. 01

चल पड़ेगी रेल ये मेरी, फिर से दौड़ेगा ये देश

SWATI AGARWAL
IRPS

रुका भले हो देश, रुकी नहीं है मेरी रेल,
जीतेगी ये जंग, बस ज़रा थमी है मेरी रेल.

जज़्बा है क़ायम, इरादे अभी भी फौलादी,
हौसले बुलंद, कसे कमर खड़ी है मेरी रेल.

सुनसान स्टेशन मेरा, राज़ यही बतलाता है,
नहीं झुकेगी, नहीं कभी झुकी है मेरी रेल.

फल सब्जी दूध दवाएं, घर घर को पहुंचाने,
ज़रूरत में मददगार, चल पड़ी है मेरी रेल.

ट्रैकमैन पायलट गार्ड, सब इसी जुगत में हैं,
कब दिन आये जब फिर दौड़ी है मेरी रेल.

खामोश पटरियां, भले थमी सब सांसें हैं,
पर कर्तव्य में तत्पर, हरी भरी है मेरी रेल.

कोरोना हो, चाहे हो कैसी भी पथ में बाधा,
जीवन सी चलती जाए, सर्वोपरि है मेरी रेल.

संवाद : समय और युवा

BY VIJAY SINGH

समय: (युवा अपनी सफलता मैं चूर लेकिन अंदर ही अंदर डर और अवसाद में जी रहा है, समय ने युवा को कई बार समझनी की कोशिश की...आज फिर वो युवा को सम्भोधित कर रहा है, लेकिन आज वो उसे समझा नहीं रहा ....सुनते है समय क्या कह रहा है)

समय : उठ खड़ा हो,क्यों ज़िंदा लाश हो तुम बने...
मूक दर्शक से क्यों अँधेरे में तुम यूँ चल रहे ...
मुर्दे से हो तुम खड़े, ना प्राण है , ना स्वाश है...चाल भी तो डिग रही ,
क्या मंज़िल को छू पाओगे, या इन गहराइओ में डूब ते चले जाओगे ...

अंधेरे के आखिर में अंधेरा होगा - २
क्या सोचा था कभी,
सफलता की इस दौड़ में तू यु अँधा होगा , क्या सोचा था कभी??

गिरती नैतिकता, गिरते चरित्र ,गिरते आदर्श पर अपने बढ़ते अभिमान को
तुम समय का परिणाम मानते हो,
खुद को बदल नहीं पाए,तृष्णाओं की नदी में बहने से रोक नहीं पाए.
और ज़माने को बदलते देखने चाहते हो।

मृत न सही पर घुट घुट कर जी रहे हो...
में आवाह्न करता हूँ,ये घृणा का आतंक और नाद अब ना समाप्त होगा,
औ युवा तू शायद अब अपनी नासमझी से ही बर्बाद होगा ???

युवा (अभी तक अपनी सफलता में मदमस्त युवा ये सब सुनकर संभल जाता है,वो अपने दम्भ को जानकार और उसे थाम कर संवाद को आगे बढ़ता है)

युवा: बस बहुत हुआ, बहुत हुआ समय ....
तुम क्यों यूँ दहाड़ रहे,
तुम भी तो नहीं मुझे राह दिखा रहे...

मानता हूँ सफलता की दौड़ में मैं था यूँ बस चल निकला ,
अपनों को भूल , मैं तो बस समय को थमने था निकला.

पर सुन समय, मैं युवा हूँ
मृत नहीं,
मशाल हूँ, सिर्फ आग नहीं,सिर्फ जलता नहीं राह भी बनता हूँ
अपनी मेहनत से जो चाहे वो पाता हूँ...

माना मैं घबराऊँगा , डर भी जाऊंगा ,
कभी-कभी अपने कदम पीछे भी हटाऊँगा ,
पर इस अंधेरे में दब कर नहीं उसे चीर कर बाहर आऊंगा.

में तो दिवाकर हूँ, रश्मि है मेरा अस्त्र,
मैं सूर्य समान हूँ, मैं तो सूरज की प्रथम किरण की तरह पुरे जग मैं बिखर जाऊंगा.

जो सपने देखते है, वो मरते नहीं ,
जो हर पल जिए वो पस्त नहीं,
वीर भोग्य वसुंधरा , है ये आह्वान मेरा,
तू सुन ले समय , मैं आ रहा हूँ तुझे थमने है ये संकल्प मेरा...

**(यहाँ तक पहुंचने के लिए हम सभी ने संगर्ष किया है सब की अपनी अपनी कहानी है,
ये अंतिम पंक्तिये समस्त अधिकारीगण ,समस्त प्रशिक्षु अधिकारीगण एवं उनके परिजनों को
निवेदित करना चाहता हूँ ...)**

नतमस्तक हूँ समय तूने मुझे झकझोर दिया,
कुछ थम सा रहा था पर तूने वो रुख आज मोड़ दिया...
मैं फिर कूच में निकलूंगा ,पर अब सिर्फ सफलता मेरा मंत्र ना होगा ,
समस्त भारतवर्ष ही अब मेरा रण होगा...

अपने लिए कुछ ना कर पाऊ , पर एक आराधना में मेरा ह्रदय होगा,
माँ भारती के चरणों से अब ये उद्घोष होगा,
सिर्फ युवा मन नहीं ,अब राष्ट्र को जागना है,
इस अंधेरे को पीछे छोड़ अब आगे ही बढ़ते जाना है
आगे बढ़ते जाना है ।

गुलों में रंग भरे, बाद-ए-नौ बहार चले...

PHOTOS BY SAGARIKA PATNAIK